भारत सरकार

शिक्षा मंत्रालय

उच्चतर शिक्षा विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-1610

उत्तर देने की तारीख-21/12/2022

शास्त्रीय भाषाओं के लिए प्रदान की गई निधि

1610 # **श्री सतीश चंद्र दूबे:**

क्या ***शिक्षा*** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) अब तक जिन भारतीय भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है, उनका ब्यौरा क्या है;
(ख) क्या सरकार ने देश में शास्त्रीय भाषाओं से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए कोई योजना लागू की है;
(ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(घ) पिछले तीन वर्षों में से प्रत्येक वर्ष और चालू वर्ष के दौरान प्रत्येक शास्त्रीय भाषा के लिए प्रदान की गई धनराशि का भाषा-वार ब्यौरा क्या है;
(ड.) क्या सरकार को पिछले दो वर्षों के दौरान शास्त्रीय भाषा परियोजनाओं के संबंध में कोई प्रस्ताव प्राप्त हुआ है; और
(च) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और सरकार की इस पर क्या प्रतिक्रिया है?

उत्तर

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री
(डॉ. सुभाष सरकार)

(क) से (घ): छह भारतीय भाषाओं नामत: संस्कृत, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और ओडिया को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया है। सरकार की नीति शास्त्रीय भाषाओं सहित सभी भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने की है। केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) चार शास्त्रीय भाषाओं जैसे कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और ओडिया सहित सभी भारतीय भाषाओं के प्रचार के लिए काम करता है। शास्त्रीय तमिल का विकास और प्रचार केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान (सीआईसीटी) द्वारा किया जाता है। भारत सरकार तीन केंद्रीय विश्वविद्यालयों के माध्यम से संस्कृत भाषा को बढ़ावा दे रही है। इन विश्वविद्यालयों को संस्कृत भाषा में अध्यापन और अनुसंधान के लिए धनराशि उपलब्ध कराई जाती है जिससे छात्रों को डिग्री,

डिप्लोमा, प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है और संस्कृत के शास्त्रीय पहलू से संबंधित किसी भी कार्य को करने के लिए कोई अलग से धनराशि उपलब्ध नहीं कराई जाती है।

विभिन्न शास्त्रीय भाषाओं के लिए आवंटित धनराशि का विवरण नीचे दिया गया है:

(रूपए लाख में)

भाषा	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23
कन्नड	107.00	108.00	106.50	171.75
तेलुगु	107.00	147.00	103.15	171.75
मलयालम	शून्य	8.00	63.97	186.75
तमिल	770. 00	1200.00	1200.00	1200.00
उडिया	शून्य	8.00	58.38	176.75

(ङ) और (च): शास्त्रीय भाषा परियोजनाओं के संबंध में कोई अन्य प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुआ है।

*****